।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

गणतन्त्र दिवस की आर्यजनों, आर्य सन्देश के शुभचिन्तकों एवं सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 36, अंक 11 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 21 जनवरी, 2013 से 27 जनवरी, 2013

विक्रमी सम्वत् 2069 दयानन्दाब्द : 188

सृष्टि सम्वत् 1960853113 वार्षिक : 250 रुपये

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website:www.aryamahasammelan.com पृष्ठ 1 से 8 तक

गणतन्त्र की मूलभावना, भारतीय समाज और शासन तन्त्र

गणतन्त्र दिवस का पर्व मनाना गर्व की बात,लेकिन गण-तन्त्र का सम्मान करना उससे भी बड़ा कार्य

सम्पादकीय

अंग्रेजों के क्रूर शासन से मुक्ति के उपरान्त भारतीय गणतन्त्र की स्थापना हुई। 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ। तब से लेकर अब तक भारतीय गणतन्त्र में अनेक उतार-चढ़ाव आ चुके हैं। भारतीय समाज अनेक वर्गो, जातियों और संस्कृतियों में विभाजित होने के उपरान्त भी कमोवेश देश की एकता में अपना हित देखता आया है। कार्यो को लेकर केंद्र और राज्यों में सत्तासीन सरकारों पर समय-समय पर अंगुलियाँ उठाई जाती रही हैं। इस पर यदि केन्द्र और राज्य सरकारें सच्चाई से विचार करते तो आज देश की स्थिति कहीं अधिक अच्छी होती। जिस स्वतन्त्रता के लिए अनगिनत भारतीय सपूतों ने बलिदान दिए उस स्वतन्त्रता को हम क्या प्रत्येक क्षेत्र में ला पाए हैं? भारतीय गणतन्त्र की मूल भावना थी-प्रत्येक व्यक्ति के साथ बिना जाति, मत, संस्कृति और लिंग तथा रंग भेद के बराबर का अधिकार है। कानून सब के लिए बराबर है। किसी भी प्रान्त में कोई भी व्यक्ति रह सकता है और अपना जीवन यापन कर सकता है। इतना ही नहीं, देश के प्रत्येक व्यक्ति को बराबर का अधिकार और स्वतन्त्रता होगी। लेकिन क्या हम गणतन्त्र की इस भावना से परिचित हैं? क्या शासन-तन्त्र तुष्टिकरण के नाम पर विशेष मत, सम्प्रदाय और वर्ग को अधिक अधिकार नहीं दे दिए हैं? क्या यह गणतन्त्र और देश के बहुसंख्यक समाज की मूल भावना के साथ खिलवाड़ नहीं है?

– शेष पृष्ठ 6 पर

गणतन्त्र की मूलभावना का सम्मान होने से ही असली गणतन्त्र फूले फलेगा। आज गणतन्त्र की बात तो हम सभी करते हैं लेकिन गण-तन्त्र दोनों के प्रति हमारा कर्तव्य क्या होना चाहिए, उसे भूल गए हैं। गणतन्त्र दिवस के पावन अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम सभी अपने देश, संस्कृति, स्वदेशी और आदर्श समाज के निर्माण में अपनी भूमिका को अच्छी प्रकार निभाएँगे। दूसरा क्या कर रहा है, उससे अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि 'हम' क्या कर रहे हैं पर विचार करें और उसे जीवन में उतारें। तभी भारत में असली गणतन्त्र की फसल लहराएगी।

केन्द्रीय गृह मन्त्री सुशील कुमार शिन्दे का विवादित बयान देश की एकता, सम्प्रभुता और अखण्डता के लिए खतरा

विस्तृत समाचार पृष्ठ 6 पर

ऐसे विवादित बयानों से विश्व में खराब हुई है भारत की छवि

आतंककारियों का हौसला बढ़ाने का कार्य किया ऐसा देश-तोड़क बयान ने

आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में

कुम्भ में वैदिक धर्म प्रचार शिविर

साहित्य, धर्म व संस्कृति की त्रिवेणी कहे जाने वाले तीर्थराज प्रयाग में लगने वाले महाकुम्भ 2013 के शुभ अवसर पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु शिविर का आयोजन किया गया है। जो आर्यजन कुम्भ मेले में भ्रमरार्थ जाना चाहते हैं वे प्रचार शिविर के स्थान कुम्भ मेले के सेक्टर संख्या.9, प्लाट संख्या 66, पश्चिम पटरी, मुक्तिमार्ग एवं सै. 14, अरैल क्षेत्र, संकट मोचन, वल्लभाचार्य मार्ग, मोबाईल टावर के पीछे पहुँचकर लाभ अर्जित कर सकते हैं। पहुँचने के पूर्व पंजीकरण कराना अनिवार्य है। मेले की तिथि 13 जनवरी से 25 फरवरी 2013 है। **प्रचार-प्रसार के लिये कार्यकर्ता अपना अधिकाधिक समय दें, जिससे प्रचार का लक्ष्य पूरा हो सके** *सम्पर्क करें – सन्तोष कुमार शास्त्री, 9919020017, आर्यसमाज कृष्णनगर, कीडगंज, जिला – इलाहाबाद (उ.प्र.)* ***E-mail : rajok51@rediffmail.com website :.www.vedic-concepts.com***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट,नई दिल्ली के सहयोग से

21 वां विश्व पुस्तक मेला

सोमवार , 4 फरवरी 2013 से रविवार, 10 फरवरी 2013 तक

स्थान : स्टॉल संख्या : बी 309 - 310, हॉल संख्या एच - 12 , प्रगति मैदान, नई दिल्ली

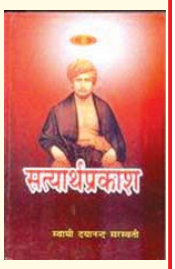

उद्घाटन 4 फरवरी प्रातः 11 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित होने वाले 21 वें विश्व पुस्तक मेले में वेद,आर्यसमाज,महर्षि दयानन्द तथा वैदिक धर्म से सम्बन्धित समस्त साहित्य के प्रचारार्थ स्टाल बुक कराया है। आर्यजनों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में स्टाल पर पधारकर तथा अन्य लोगों को स्टाल पर पधारने की प्रेरणा करके कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा साहित्य प्रचार कार्य में सहयोगी बनें।

वेद-स्वाध्याय

आचार्य के सद्‌गुण : एक ज्ञानात्मक, प्रेरक और जीवनोपयोगी विवेचन

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन। स चिद्विवेद निहितं यदासामपीच्यं१गुह्यं नाम गोनाम्।। ऋ. ९ / ८७ / ३ ।।

अर्थ– वह आचार्य (ऋषिः) वेद मन्त्रों के रहस्यों को जानने वाला (विप्रः) विविध विद्याओं का ज्ञाता (पुर एता) जनता के आगे चलने वाला (ऋभुः) बुद्धिमान् (काव्येन उशना) अपने काव्य, सूक्ष्मतत्त्व ज्ञान से लोकप्रिय है (स चित् विवेद) वही यह बात जानता है कि (आसाम् गोनाम्) हर शब्द गोचर पदार्थ का (अपीच्यम्) एक गुणवाची सार्थक प्रशंसनीय (नाम) नाम भी है जो (गुह्यम्) अज्ञानियों से छिपा रहता है। यह नाम ईश्वर है।

आचार्य की व्युत्पत्ति निरुक्त में इस प्रकार की है– **आचार्यः कस्मादाचारं ग्राह्यत्याचिना त्यर्थानाचिनोति बुद्धिमिति वा। (नि. 1.2.4)** *जो सदाचार की शिक्षा दे उसे आचार्य कहते हैं। शास्त्रों का ज्ञान देकर बुद्धि की वृद्धि करे वह आचार्य है। विद्या गुरुगम्य होने से योग्य गुरु का होना पहली बात है। इसके अतिरिक्त जिसे विद्या दी जा रही है वह भी सुपात्र होना चाहिये। योग्य पात्र को दी गई विद्या फलवती होती है। तैत्तिरीय उपनिषद् का उद्‌गम शिक्षावली में कहा है–***आचार्यः पूर्वरूपम्। अन्तेवास्युत्तर रूपम्। विद्या सन्धिः। प्रवचनं सन्धानम्।** *विद्या का उद्‌गम स्थान आचार्य है। विद्या का लक्ष्य शिष्य को विद्वान् बनाना है। इसलिये आचार्य पूर्वरूप, अन्तेवासी शिष्य उत्तर रूप, विद्या इन दोनों को मिलाने वाली और विद्या की अभिव्यक्ति प्रवचन से होती है अतः प्रवचन सन्धान है।*

***आचार्य की कामना** –इसी वल्ली में आगे जाकर आचार्य कहता है –मैं अमृत के दिव्य गुणों को धारण करूँ। मेरा शरीर बलवान् हो। मेरी जिह्वा मधु से सनी हो। मेरी मेधा नवीन ज्ञान का आवाहन करती रहे। मेरे आश्रम में वस्त्र, गाय, अन्न आदि की प्रचुरता बनी रहे। मेरे पास जो कुछ आये उसे इन ब्रह्मचारियों का जीवन निर्माण करने में लगा दूँ।*

***आ मा यन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा** चारों दिशाओं से मेरे पास ब्रह्मचारी आयें। **प्र मा यन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा** उत्कृष्ट ब्रह्मचारी आयें जो **दमायन्तु–शमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा** शम–दम अर्थात् जितेन्द्रिय होंवे। **यशो जनेऽसानि स्वाहा, श्रेयान् वस्यसोऽसानि स्वाहा।** मैं न केवल ब्रह्मचारी अपितु जनता में भी यश रूप हो जाऊँ। धनी पुरुषों में भी श्रेष्ठ माना जाऊँ।*

शिक्षा के क्षेत्र या गुरुकुल में आचार्य का पद सबसे महत्त्वपूर्ण है। उसके पास देश–देशान्तर से आये ब्रह्मचारियों का जीवन निर्माण, चरित्र की शिक्षा, अनुशासन, तप, संयम का पालन, विद्याध्ययन, भोजन–आवास एवं जन सम्पर्क जैसे अनेक कार्यों का दायित्व है, अतः सर्वप्रथम उसे इन सभी कार्यों का अनुभव और प्रशासनिक कुशलता का भी अभ्यास करना होगा। वेद इन सभी गुणों की गणना करते हुये बतला रहा है कि आचार्य में किन गुणों का होना आवश्यक है।

1. **ऋषिः ऋषिर्दर्शनात् स्तोमान् ददर्श** *(नि0 2.3.11) मन्त्रों का साक्षात्कार करने वाले को ऋषि कहते हैं। वेद में जिन मन्त्रों या सूक्तों का साक्षात्कार कर जिन ऋषियों ने उनका प्रचार किया उनके नाम सूक्तों के आगे जोड़ दिए गये हैं। ध्यान रहे ऋषि मन्त्रों के रचयिता न होकर उसके द्रष्टा हैं। आचार्य की पहली योग्यता वेद का विद्वान् होना है। उसकी प्रसिद्धि सुन कर ही तो चारों ओर के ब्रह्मचारी उसके पास पढ़ने के लिये आयेंगे। ऋग्वेद 10.26.5 में ऋषि की योग्यता बतलाई है – 1.* **प्रत्यर्धिर्यज्ञानामश्व हयो स्थानाम्। ऋषिः स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावयत् सखः।।**

यज्ञादि शुभ कार्यों में सब से आगे रहकर उसे पूरा करना, मानव मात्र का हितकारी और मेधावी जनों का जो मित्र हो उसे ऋषि कहते हैं।

2. **विप्रः** *मेधावी, बुद्धिमान् जो शिष्यों के अज्ञान को हटाकर उन्हें ज्ञान से परिपूर्ण करे।*

3. **पुर एता जनानाम्** *: लोगों का मार्गदर्शक, अच्छे कार्यों में सबसे आगे बढ़–चढ़ कर भाग लेने वाला। जाओ ऐसा करो न कहकर आओ हम सब मिलकर इस कार्य को करें इत्यादि गुणों वाला सबका अग्रणी या नेता स्वतः ही बन जाता है।*

4. **ऋभु**– *उरु भान्ति अपने तेज से प्रकाशित बुद्धिमान्।*

5. **धीरः**– *योग साधना करने वाला, धैर्यवान, किसी भी कार्य को सोच–समझ कर करने वाला और जो एकदम विक्षिप्त या उतावला न हो जाये।*

6. **उशना काव्येन**– *अपनी बुद्धि, वाक्य चातुरी और सूक्ष्मदर्शिता से लोगों में लोक प्रिय बन जाना।*

7. आचार्य की सातवीं योग्यता यह होनी चाहिये कि वेद का प्रत्येक मन्त्र या शब्द यौगिक होने से ईश्वर का वाचक है। कहीं प्रत्यक्ष और कहीं अप्रत्यक्ष रूप में प्रत्येक मन्त्र का अर्थ आध्यात्मिकता और ईश्वर की ओर ले जाने वाला है, इसका उसे ज्ञान रहे।

नव मण्डल के प्रत्येक मन्त्र का देवता या निहितार्थ सोम होने के कारण आचार्य को भी सोम कहते हैं। अथर्ववेद इसकी पुष्टि करता है–

आचार्यो मृत्युर्वरुणः सोम ओषधयः पयः।

अथर्व. 11.5.14 ।।

ब्रह्मचारी के दुर्गुणों को मारने से उसका नाम मृत्यु है। नियम और अनुशासन में बान्धने से वरुण, ऊपर से नारियल की भाँति कठोर परन्तु भीतर से विनम्रता के कारण उसे सोम अर्थात् सौम्य स्वभाव वाला कहते हैं। एक एक दोष को दूर करने के उपाय बताने से औषध और विद्यामृत पिलाने से उसका नाम पय है।

पूर्वोक्त गुणों से सुभूषित इन गुरुजनों के चरणारविन्दों में देश–देशान्तर के विद्यार्थी आकर आचार–विचार और ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा ग्रहण करते थे और इन्हीं के कारण यह देश कभी विश्व गुरु के पद पर सुशोभित था।

महर्षि देव दयानन्द का कृतित्व और व्यक्तित्व : जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स की दृष्टि में

महर्षि देव दयानन्द के कृतित्व और व्यक्तित्व पर भारत में अनेक चिन्तकों, समाजसेवियों, साहित्यकारों और दार्शनिकों ने लेखनी चलाई है। लेकिन विदेशी विद्वानों और दार्शनिकों ने क्या लिखा और कहा है, बहुत कम लोगों को ज्ञात है। जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स ने महर्षि के कृतित्व और व्यक्तित्व को भावपूर्ण कविता में ढाला है। ज्ञातव्य है, महर्षि से सन्दर्भित ऐसी कविताएँ अभी तक भारत में नहीं लिखी गई, इससे इन कविताओं का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इसका काव्यानुवाद वेद-विचारक और नवयोग के प्रतिस्थापक डॉ. ज्ञानचन्द्रजी ने इसका काव्य भावानुवाद साहित्यपूर्ण भाषा में किया है। यह श्रद्धात्मक काव्य अत्यन्त श्रद्धा के साथ धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। आर्य महानुभाव इसे बहुत ही श्रद्धा और भक्तिभाव से परिपूर्ण होकर ही पढ़ें। प्रस्तुत धारावाहिक के दसवें भाग का मूल अंग्रेजी भाग पिछले अंक में प्रकाशित किया गया था। उसका काव्यानुवाद प्रकाशित किया जा रहा है।। 'प्रकृति चित्रण और आदर्श जीवन सन्देश' से सम्बन्धित धारावाहिक के इस भाग को भी पूर्व की भाँति आप सभी भक्तिभाव एवं श्रद्धा के साथ पढ़ेंगे ऐसी आशा है-अखिलेश आर्येन्दु

स्वामी दयानन्द सरस्वती

''उत्तम, उदर चिन्तन द्वारा करते वे सबके हृदय शुद्ध। मानवी–नियति सदा उसके निज संकल्पों में पलती है एवं विचार ही जगती को संयत–सुनियन्त्रित कर सकता''

"यदि स्थिर और प्रबल हो तो होता विचार अति शक्तिमान
संकेन्द्रित हो यदि रश्मि केन्द्र से भ्रष्ट नहीं होने पाती
शुभ और अशुभ दोनों निमित्त, वह जग को वश कर सकती है,
मानव की नियति सदा उसके संकल्पों में पोषण पाती।
बाहर के प्रघटन, या उनकी समुचित अथवा परिभ्रष्ट गठन,
आन्तरिक विचार सृष्टि के ही हैं स्वाभाविक अथवा परिभ्रष्ट गठन,
आन्तरिक विचार सृष्टि के ही हैं स्वाभाविक परिणाम सदा
उन्नत विचार–धारा से निज उर को निर्मल अरु शुद्ध करो,
होते विचार सर्जक ही हैं अरु इनकी शक्ति अपार, अटल
जागो अब उच्च अभीप्सा में निंदित विचार का त्याग करो।
ऐसी पुस्तकें न पढ़ो कि जो तुमको अपवित्र बनाती हैं,
देखो न खेल–नाटक ऐसे जो मन को भ्रष्ट बनाते हैं,"
"देखो निसर्ग की नैसर्गिक सुन्दरता, उसकी निजता में
महिमाशाली सूर्यास्त लखो, सब ओर लालिमा बिखराता"
"तमसावृत नभ में कोमलतम उस बालचन्द्रमा को देखो,
देखो आभामय राका के, मोहक शिशुओं जैसे झिलमिल,
एवं देखो नभ में सुन्दर, जलदों के प्रवहमान दल बल,
उस नीली और विशाल नदी की परिवेष्टित छवि को देखो
जो सिंधु दिशा की ओर मुदित चंचल लहरों को भेज रही।"
"तुम अरे ! लखो ये स्वप्नलीन इतने विशाल आगार, भवन,
लहराते ताड़ पादपों के नीचे में पशु तन सहलाते
सबके मानस को भर देंगे अपनी सौन्दर्य प्रभा से ये
अरु अपनी नम्र प्रकृति से ये तुमको उभार देंगे ऊपर,
उस परम देव तक जो प्रकृति में सतत निवास किया करता,"
"मत सुनो अशुभ शब्दों को अरु मत सुनो दुरित–पूरित भाषा
संवर्धित करो शब्द ऐसे जो भद्र और हों शुभ–पावन
प्रकृति के गान सुनो एवं मधुमय निसर्ग के गीत सुनो"
"मारुत प्रवाह में जब पादप शाखाएँ नर्तक करती हैं
जब कोमल निशा समीरण मन्द ध्वनि में विनयार्चन करता,
तब सुनो निखिल प्रकृति के मधुमय गायन की शुभ गरिमा को
पक्षीगण अरु विकचित प्रसून, अरु नभ में जलदों का विचरण,
गाओ इन सबके साथ स्वयं तुम भाव भरी हे आत्माओ।"
मत पिओ तीक्ष्ण पेयों को, सेवन करो न विकृत मसालों का,
ऐसे जीवन को जिओ कि जो सहज, सरल अभ्यास युक्त
इस तरह प्राप्त कर पाओगे तुम स्वास्थ्य और सामर्थ्य महत्–
अन्तर में सदा मनन–चिन्तन के द्वारा आत्म निरीक्षण हो।"
"ईश्वर को अन्तर में देखो, उसके सदैव आदेश सुनो,
मन में विनम्र अरु प्रेम पूर्ण पूजा का भाव रहे प्रतिपल
गम्भीर सदाशय पूर्ण प्रार्थना एवं पावन वेद मन्त्र,
जब बोलो तो अति सुदृढ़ और एकाग्र भाव से ही बोलो,
ये मन्त्र तुम्हारे मन एवं काया को गौरवपूर्ण करें–
ये तुम्हें बनाएँगे अतिशय पौरुष युत उत्तम मनुजपुत्र।"

स्वाधीनता संग्राम : महर्षि दयानन्द-आर्य समाज और अंग्रेजी साम्राज्य

इतिहास के पन्नों से –

डॉ स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

गतांक से आगे-

फल स्वरूप पटियाला के देशी राज्य में एक विशेष षड्यन्त्र रचा गया, जो आर्य समाज के इतिहास में एक स्मरणीय घटना रहेगी। पटियाला में आर्य समाज का अच्छा संगठन था और कई आर्यसमाजी व्यक्ति पटियाला राज्य के शासन–विभाग में अच्छे पद पर थे। उन

स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज की भूमिका के सम्बन्ध में मोटे तौर पर आर्यजन जानते हैं। वे यह भी जानते हैं कि तत्कालीन जितने भी आन्दोलन थे उनमें आर्य समाज सबसे अधिक सक्रिय और उग्र था। लेकिन भारत के इतिहास में आर्य समाज के सम्बन्ध में अधिकतर दुराग्रहपूर्ण मानसिकता से ही लिखा गया है। इसका कारण यह है कि जितने भी प्रसिद्ध इतिहासकार हुए हैं उन्होंने आर्य समाज के उस पक्ष पर ध्यान ही नहीं दिया जो स्वदेशी, स्वराज्य, स्वधर्म, स्वदेश और आदर्श समाज की भूमिका को लेकर हैं। आज भी स्वाधीनता के 65 वर्ष के उपरान्त भी आर्य समाज के समग्र योगदान और मानवता के लिए किए गए इसके 'अवदान' को हम न तो इतिहासकारों को ठीक से बता सकें हैं और न तो उस समाज को जो आर्य समाज को मात्र खण्डन–मण्डन करने वाली या प्रेम–विवाह कराने वाली महज एक संस्था के रूप में मानते आ रहे हैं। आर्य समाज के मनीषी विद्वान, इतिहासकार और गवेषकों ने अपने कठिन अध्यावसाय से आर्य समाज के उन अनेक पक्षों को जन मानस के सम्मुख लाने का प्रयास किया है, जिसे आर्य समाज से सम्बन्ध रखने वाले आर्य बन्धु भी नहीं जानते हैं। इन्हीं इतिहासकारों और गवेषकों में आर्य जगत् के महान वैज्ञानिक, साहित्यकार, वेदज्ञ, भाषाविद्, शिक्षाविद् और लेखक डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी ने अपनी पुस्तकों में स्वाधीनता समर के इतिहास को बहुत ही प्रेरक और जीवन्तता के साथ वर्णित किया है। स्वामी जी की पुण्यतिथि 18 जनवरी पर उनकी पुस्तक 'राजनीतिक संस्मरण' से स्वाधीनता समर के कुछ ऐसे अंशों को जानकारी और प्रेरणा के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है जो कई दृष्टि से उपयोगी हैं। आशा है पाठकों के लिए लेख उपयोगी और प्रेरक होगा। लेख प्रकाशित करने का हमारा उद्देश्य स्वामीजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनके कृतित्व और व्यक्तित्व को स्मरण करना–कराना और आर्यजनों को उनके कृतित्व और व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित करना है।

लोगों के प्रयास से रियासत में सुधार के अच्छे कार्य आरम्भ हुए। इस समय पटियाला में वारबरटन महोदय का बोलबाला था। वह बुड्ढा व्यक्ति था–70 वर्ष से भी अधिक की उम्र का। लोग उसके व्यवहार से तंग आ चुके थे। यह व्यक्ति आर्यसमाजियों के पीछे पड़ गया। सरकार तो ऐसा अवसर चाहती ही थी कि आर्य समाज की राष्ट्रीय प्रवृत्तियों को दबा दे।

वारबरटन की आड़ में सरकार ने एक अच्छा खासा अभियोग आरम्भ कर दिया। कहने को तो यह पटियाला रियासत का मुकदमा था, पर इसके पृष्ठ में आश्रय समस्त भारतीय सरकार का था। 11 अक्टूबर 1909 को यह समाचार मिला कि राज–विद्रोह के अभियोग में पटियाला के अनेक प्रमुख आर्य–समाजी गिरफ्तार कर लिए गए हैं। इंडियन पेनेलकोड के दफा 124 ए और 153 ए में गिरफ्तारी की गई और लोगों के घरों की तलाशी ली गई। भारत के प्रमुख पत्रों में इस समाचार को सनसनीदार शीर्षक दिए गए। आर्य समाज भवन में ताला लगा दिया गया। चपरासी से लेकर प्रेसिडेंट तक लगभग 84 व्यक्ति कैद में थे। लोगों के घरों से अन्य कागजों के साथ बाइबिल, रामायण और स्वामीजी के चित्र भी पुलिस उठा ले गई जिनके आधार पर मुकदमा चलाना था।

*अभियोग के लिए पटियाला–नरेश ने एक विशेष कोर्ट का उद्घाटन किया। पंजाब चीफकोर्ट के एक प्रमुख वकील **आर्थर ग्रे** ने रियासत के पक्ष की पैरवी की। 17 दिसम्बर 1909 को ग्रे की पहली वक्तृता हुई। यहाँ यह सम्भव नहीं है कि ग्रे की समस्त युक्तियों का प्रदर्शन किया जाए। उस समय एक अंग्रेजी अखबार **पंजाबी** नाम से निकलता था। उसमें इस मुकदमें का पूरा हाल छपा है। **पायनियर** में भी ग्रे महोदय की वक्तृता का सारांश छपा था। ग्रे की आलोचनाएँ लगभग उसी प्रकार की थीं जिस प्रकार की आलाराम के मुकदमें की। केवल इतना अन्तर था कि ये अधिक संयत भाषा में थीं और विस्तार से परिपुष्ट की गई थीं। ग्रे की कुछ युक्तियाँ इस प्रकार थीं–*

*(1) लाहौर में आर्य समाज स्थापित होने के अनन्तर समाज की दो सभाएँ बनाई गई। एक के सदस्य **महर्षि दयानन्द** द्वारा मनोनीत **श्यामजी कृष्ण वर्मा** थे। (इनका उल्लेख मैं आगे करूँगा) इन सज्जन ने पेरिस से एक वक्तव्य दिया था, जिसमें कर्जन विली की हत्या का समर्थन किया गया था। इस समर्थन के अनन्तर भी आर्य समाज से इनको पृथक नहीं किया गया। (**18 दिसम्बर 1909 की वक्तृता**)*

*(2) सत्यार्थप्रकाश में शत्रु की हत्या करना समर्थित है। सत्यार्थ प्रकाश के शब्द हैं–**दुष्ट पुरुषों को मारने में हन्ता को पाप नहीं होता। नाततायिबधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन (मनु0 8/351)।***

*(3) केवल वेदज्ञ को ही राजा और राज सभासद होने का अधिकार है। (**मनु. 7/43**)*

*(4) स्वराज, स्वदेश में उत्पन्न हुए वेदादि शास्त्रों को जानने वाले को मंत्री करे (**समु. 6,मनु. 7/54**) ऐसा विधान है।*

*(5) अवैदिक लोगों का धर्म राजधर्म नहीं हो सकता वह अमान्य है। सत्यार्थप्रकाश के शब्द ये हैं– **जो अविद्या–युक्त, मूर्ख, वेदों को न जानने वाले मनुष्य जिस धर्म (राजधर्म) को कहें, उसको कभी न मानना चाहिए।** ग्रे का अभिप्राय यह है कि यह वाक्य ब्रिटिश सरकार के कानून की अवज्ञा की ओर संकेत करता है। क्योंकि यह सरकार विदेशी होने के साथ–साथ अवैदिक भी है।*

*(6) षष्ठ समुल्लास के अन्त में सत्यार्थ प्रकाश में ये शब्द हैं– **हम प्रजापति अर्थात् परमेश्वर की प्रजा और परमात्मा हमारा राजा, हम उसके किंकर भृत्यवत् हैं। वह कृपा करके अपनी सृष्टि में हमको राज्याधिकारी करे।' स्पष्टतः यह प्रार्थना स्वराज्य–प्राप्ति की है।***

*(7) एकादश समुल्लास के आरम्भ में – '**पारस मणि पत्थर तो सुना जाता है, यह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसके लोहे–रूप दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।** इसकी व्यञ्जना यह है कि भारत की आर्थिक सम्पदा हरण करके, इंग्लैण्ड धनाढ्य हो रहा है। अतः यह वाक्य राजविद्रोही है।*

(8) अंग्रेजों के प्रति स्वामीजी ने 11 वें समुल्लास में लिखा है– देखो ! अपने देश के बने हुए जूते को आफिस और कचहरी में जाने देते हैं, इस देशी जूते को नहीं। इतने ही में समझ लेओ कि अपने देश के बने जूते की भी कितना मान–प्रतिष्ठा करते हैं उतना भी अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते। देखो ! कुछ सौ वर्ष से ऊपर इस देश में आये यूरोपियनों को हुए और आज तक यह लोग मोटे कपड़े आदि पहिरते हैं जैसे कि स्वदेश में पहिरते थे, परन्तु उन्होंने अपने देश का चाल–चलन नहीं छोड़ा और तुममें–से बहुत से लोगों ने उनकी नकल कर ली। इसी में तुम निर्बुद्धि और वे बुद्धिमान् ठहरते हैं।' स्पष्ट है कि ये शब्द स्वदेशी आन्दोलन की जान हैं और विदेशी माल के बायबाट की ओर संकेत करते हैं।

*(9) ग्रे महोदय ने '**आर्याभिविनय**' ग्रन्थ से, जिसमें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना आदि सम्बन्धी मन्त्र है, कुछ उद्धरण दिए हैं। ग्रे का कहना है कि जो आर्य इस प्रकार की स्तुति करेंगे वे राजभक्त नहीं रह सकते। उनका ब्रिटिश राज्य से विद्रोह करना स्वाभाविक है। आर्याभिविनय की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं, जिन पर ग्रे को आपत्ति है–*

*(क) '**आप 'वरुण' अर्थात् सर्वोत्कृष्ट होने से वरुण हो, सो हमको वर राज्य, वर विद्या, वर नीति देओ.. हम पर सहायता करो जिससे सुनीति–युक्त होके हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े।** (1/18)*

*(ख) '**वह ईश्वर आशीर्वाद देवे, जिससे अपने शत्रु कभी न बढ़ें।** (1/22)*

*(ग) '**हमारे लिए चक्रवर्ती राजा–आपकी करुणा से हमारा राज्य और धन सदा वृद्धि को प्राप्त हो।'** (1/43)*

*(घ) '**अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों, तथा हम लोग पराधीन न हों** ।'(2/31)*

*(ङ) '**किसी एक मनुष्य को हम लोग राजा कभी न मानें।'** (2/52)*

10. स्वामी जी ने गोरक्षा का समर्थन करके गो–वध करने वाले अंग्रेजों एवं अन्य विदेशियों के प्रति विद्वेष का भाव फैलाया, यह भी धारणा ग्रे महोदय की थी।

अस्तु, पटियाला के इस अभियोग ने आर्य समाज के क्षेत्र में नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी। जो आर्यसमाजी उस समय जेल में रखे गये थे, उनमें से अनेक तो रोगी थे, पर उनके इलाज का कोई प्रबन्ध न था। जेल से बाहर जो सम्बन्धी थे, उनको भी यातनाएँ सहनी पड़ रही थीं। गणेशीलाल का बच्चा सदा के लिए अन्धा हो गया। लाला बैजनाथ की नवजात कन्या मर गई। और वधू मरते–मरते बची, पर उन्हें जमानत पर न छोड़ा गया।

यह सनसनीदार अभियोग 19 फरवरी 1910 को महाराजा पटियाला की ओर से वापस ले लिया गया। इस अभियोग में महात्मा मुंशीराम जिज्ञासु (पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द) ने आर्यसमाजियों की पैरवी का अच्छा प्रबन्ध किया था, जिसमें यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया कि आर्य समाज धार्मिक संस्था है, न कि राजनैतिक और स्वदेशानुराग कोई पाप नहीं है, और न इससे अभिप्राय राजविद्रोह का है।

यह स्मरण रखना चाहिए कि सन् 1910 वह समय था जब स्वदेश और स्वराज शब्द का प्रयोग ही विद्रोही–भावनाओं का द्योतक समझा जाता था। ग्रे ने अपने वक्तव्य में लाला लाजपतराय पर आक्षेप करते हुए यह कहा कि ये अपने लेख और व्याख्यानों *में मेजिनी, गैरीबाल्डी, शिवाजी और स्वामी*

– शेष पृष्ठ 6 पर....

आधुनिक युग की विकृतियाँ और भारतीय सांस्कृतिक समाधान

- डॉ० ज्ञानचन्द्र

मनुष्य को मानव बनाने के लिए वैदिक ऋषि-मुनियों ने लाखों वर्षों के गहन अनुसन्धान और परीक्षण के उपरान्त दो उपायों को प्रमुख बताया। वे दोनों उपाय हैं-योग साधना और संस्कार साधना। जब भी मानव अपनी वृतियों और प्रवृतियों से नीचे गिरता है तब वह इन दोनों से रहित होता है। आज विश्व मानव समाज इन दोनों साधन-प्रणालियों से दूर होता जा रहा है। वह उस पश्चिम की बन्दरी नकल कर रहा है जो भोगवाद और रोग मार्ग की ओर ले जाती हैं। मनुष्य से पशु तुल्य या इससे भी नीचे गिरते हुए भी वह मूढ़ता या अन्य कारणों से अपनी इस पतन की स्थिति को समझ नहीं पा रहा है। सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि 'इस पतन को' कानून, दण्ड या रासायनिक उपायों से रोकना चाह रहा है। चिन्तन करने की बात यह है कि यदि दण्ड का भय या रासायनिक उपायों से उसे भय होता तो वह हत्या, जिसमें उसे मृत्यु दण्ड या उम्रकैद हो सकती है से भी नहीं डरता है। इस लिए इस गम्भीर विषय पर अध्यात्म और दर्शन वेत्ताओं से विचार करके इसका समुचित समाधान किया जाना चाहिए। वरना यह कहावत चरितार्थ दिख ही रही है कि 'ज्यों ज्यों दवा की, रोग बढ़ता ही गया'। नये वैज्ञानिक अनुसन्धानों से वेद में वर्णित उस वैज्ञानिक तथ्य की पुष्टि हुई है कि वातावरण में जिस प्रकार की तंरगें अधिक होंगी उसी मात्रा में उस प्रकार की प्रवृतियों में वृद्धि होती जाएंगीं। चिन्तन की बात यह है कि आज विश्व हिंसा, व्याभिचार और अन्य प्रतिकूल तरंगें बहुत अधिक मात्रा में बूचड़खानों, दंगों, झगड़ों-फंसादों और अन्य विधियों से निकल रही हैं। केवल भारत में ही 37 हजार से अधिक पंजीकृत छोटे-बड़े बूचड़खाने हैं। लाखों बिना पंजीकृत चल रहे हैं। यह चिन्तन की बात है कि 'अहिंसा परमो धर्मः' और अहिंसा जहाँ मानव का सबसे बड़ा धर्म माना गया वहां जब इतने बड़े पैमाने में बूचड़खाने हैं, तो वहाँ की क्या स्थिति होगी जहाँ की जीवन शैली ही हिंसायुक्त है। इस लिए यदि मनुष्य को सही अर्थो में मानव बने रहना है तो हिंसायुक्त जीवन शैली को हरहाल में त्यागना ही होगा, और कोई दुष्कर्म, हिसां, व्याभिचार व अन्य दुर्वृतियों से छूटने का शाश्वत उपाय नहीं है। प्रस्तुत लेख के लेखक डॉ. ज्ञानचन्द जी वैदिक और वैदिक इतर ग्रन्थों के प्रखर गवेषक, लेखक और प्रयोगधर्मी हैं। लेख उस समस्या के समाधान हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है जो आज भारत को ही नहीं बल्कि विश्व मानव समाज को उद्वेलित और दुख सागर में डुबो रहा है। आशा है लेख पाठकों को पसन्द आएगा।(09868235056)

अपराध, दुष्कर्म, अनैतिकता, भ्रष्टता व धृष्टता की प्रवृत्ति सतत वर्धमान है तथा कोई उपाय और विधि–प्रणाली समाज में सतत् प्रवर्द्धमान आसुरिक विकृतियों को रोक नहीं पा रही है। बहुसंख्यक जन सोचते हैं कि कठोर दण्ड और तीव्र प्रताड़ना आदि से लोगों को भय व सभ्यता के पाठ पढ़ाकर समाज को विकृत और अपराधी वृत्ति से सुरक्षित किया जा सकता है। परन्तु परीक्षणों –निरीक्षणों से यह स्पष्ट देखा जा रहा है कि ये सब उपाय व्यर्थ हो चुके हैं। प्रतिदिन के गणित से युवक–युवती जन अशुभ, अशुचि और असंस्कृत व्यवहारों की ओर ही प्रेरित हो रहे हैं।

ऐसा क्यों हो रहा है? मूल कारण है जीवन मूल्यों और आदर्शों की पूर्ण विलोम गति हो जाना। आदर्शों का, मूल्यों का पूर्णतः उलट जाना। विज्ञान ने अपनी चकाचौंध कर देने वाली आविस्कृतियों से जीवन में साधन सुलभता, सरलता व सुखाराम तो बहुत दिए परन्तु जीवन की महत्ता को लगभग शून्य कर दिया।

जीवन को अकस्मात प्रघटित घटना मानने वाला आधुनिक विज्ञान सुख–भोग, आनन्द, उल्लासमय जीवन तथा देशज कानूनों के सम्यक पालन से महत्तर कोई उद्देश्य दे नहीं सका आजतक। इतनी सुव्यवस्थित बाह्य प्रकृति का उद्यम और व्यवस्था तथा जीव–जन्तुओं और सर्वोपरि मानव की दैहिक, प्राणिक व मानसिक संरचना को लक्ष्य–प्राप्तव्य हीन बना दिया विज्ञान की उद्घोषणाओं ने। इस सबका परिणाम अनवरुद्ध आनन्द–तृप्ति–भोग और विलास ही हो सकता था। और आनन्द–भोग के लिए धन व प्रतिष्ठा बड़े साधन हैं, महत्त्वपूर्ण साधन हैं। अतः सारे मनुष्य जिस किसी तरह धनोपार्जन, धन संग्रह और प्रतिष्ठा प्राप्त करने में लगे हैं। आज जीवन मूल्य हैं लाभार्जन, सुखार्जन, प्रतिष्ठा अर्जन और कुछ मूल्य, लक्ष्य, ध्येय रह ही नहीं गए हैं।

भारतीय संस्कृति कुछ भिन्न ही विचार शैली के साथ जीवन का चित्र और जीवन की व्यवस्था निर्मित करती है। भारतीय जीवन के मूल्य और आदर्श गहन, सघन, दीर्घ और अन्तर्भासानुसार प्राप्त फलादेशों पर आधारित हैं। अनुमान और अन्धविश्वासों पर किंचित भी आधृत नहीं हैं।

वैदिक परम्परा–प्रसूत भारतीय विज्ञ–पुरुषों ने सर्व प्रथम जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया। यह निर्धारण बाह्य प्रकृति के गहन अध्ययन, परीक्षण व निरीक्षण के द्वारा प्राप्त फलश्रुति थी। साथ ही मानव के बीजवपन, जन्म तथा सतत विकचती व प्रस्फुटित होती प्राण व मन की प्रवृत्तियों के परीक्षण, निरीक्षण, अध्ययन व प्रयोग–प्रक्रिया पर आधारित थी। 'प्राण' तत्त्व पर भारतीय ऋषियों का अध्ययन गहनातिगहन था और उसी का सम्पूर्ण आधार लेकर उन्होंने वनस्पति, तिर्यक, जीव–जन्तुओं की प्रक्रिया के साथ मानव की वृत्ति–प्रवृत्तियों का अध्ययन करके कर्त्तव्य कर्म, करणीय व अकरणीय कर्मों के विवरण तैयार किए थे।

*जीवन का लक्ष्य विकास, सर्वतोमुखी विकास, सतत विकास और सुकृतिदिशा ओर विकास माना गया। क्योंकि सतत् उन्मीलन, उन्मेषण, विकास और प्रस्फुटन प्रकृति में सर्वत्र व्यापक रूप से देखा जाता है। मानवेतर प्राणियों व वनस्पति आदि में विकास प्रकृति के प्रभावों व प्रक्रियाओं से स्वतः होता है। परन्तु मानव में विचार–शीलता होने के कारण वह अपने विकास और उत्थान के सूत्र व परिमाण स्वयं निर्णय कर सकता है। प्राण विकास का महत्त्वपूर्ण करण है। प्राण में आवेग, प्रवेग, उत्तेजना और आवेश स्वभावगत है। इसीलिए वेद में अनेक स्थलों पर 'प्राण' व 'अग्नि' पर्यायवाची रूप में प्रयुक्त हुए हैं। प्राण या अग्नि प्राकृतिक ऊर्जाएँ हैं। प्राकृतिक ऊर्जाओं को संग्रहीत, नियंत्रित व उपयुक्त रीति से प्रधारित, प्रवाहित न किया जाय तो व विकास माध्यम के स्थान पर **विकार** माध्यम बन जाती हैं। प्राण शक्ति को संग्रहीत, नियंत्रित व संयमित करने की अत्यन्त उपयुक्त व सफल विधि–व्यवस्था वैदिकों ने संधानित व विकसित कर ली थी।*

***प्राण की वैदिक संज्ञा है 'असुः' प्राण का अनियंत्रित, असंयमित उपयोग व उपभोग करने वाले लोग ही 'असुरः' कहे गए। प्राण का अज्ञानपूर्ण व नैसर्गिक उपयोगोपभोग करने वाले 'पशु' कहे गए। 'पशु' अज्ञान, भय व अविचारशील प्राणी है। वह प्राण को नैसर्गिक रूप से भोजन,** निद्रा, आत्मसंरक्षण व संतति वर्धन मात्र में उपयोग में लाता है। परन्तु असुर वृत्ति का मानव क्योंकि विचार सामर्थ्य से युक्त होता है, वह अप्रशिक्षित व अनियंत्रित प्राण का उपयोग भोग, विलास और आवेशात्मक क्रूर कार्यों में प्रयुक्त करता है।*

मानव को पशु से भिन्न पाशविकता विहीन करके सुसभ्य व सुसंस्कृत बनाने के लिए एक उपाय तो किया गया– मन को विचार के करण मानस को 'शिव–संकल्प' बनाने का। प्राण–ऊर्जा के आवेशों से परिचालित अबोध मानव को शिव संकल्प के प्रशिक्षण व अभ्यास द्वारा प्राण को सभ्य, सुसंस्कृत बनाकर प्राण को नियन्त्रित, संयमित व आज्ञा पालक बनाने का प्रयास गुरुकुलों में किया जाता था।

'मन' को शिव–संकल्प करने के प्रशिक्षणों में दूसरी प्रक्रिया थी, भावनाओं और संवेदनाओं को जगाने व प्रखर बनाने के लिए साहित्य, संगीत व कला का गहन प्रशिक्षण देना। इन प्रवृत्तियों के विकास से प्राण की प्रधाराएँ उत्तम, शुभ, सुरुचिपूर्ण व निर्माणकारी भावनाओं को उभार कर मानव को एक कुशल, दक्ष, चतुर, मर्मदृष्टि युक्त व सभ्य–सुसंस्कृत मानव बना पाने में वैदिकों को अपूर्व व अनुपम सफलता प्राप्त हुई थी।

यहाँ महाराजा भतृहरि के श्लोक का संदर्भ देना उपयुक्त होगा–साहित्य, संगीत, कला विहीनः साक्षात्पशुः पुच्छ विषाण हीनः अर्थात् साहित्य, संगीत व कला से हीन मानव बिना सींग पूंछ का पशु है।

'तन्मेमनः शिव संकल्पमस्तु' की वैदिक अमीप्सा और कलाओं के द्वारा भावनाओं व संवेदनों का शुभकृत विकास एक सुनिश्चित लक्ष्य था। जीवन निर्माण का आदर्श मनुष्य के विकास का और पार्थिव जीवन को सुन्दर, अलंकृत और सुसंस्कृत करने का।

'चेतना' को सतत् और अनन्त मानने वाले ऋषि कल्प मानवों ने सतत् चैतन्य की वृत्ति, प्रवृत्ति, परिवर्तन और जीवन की वरीयताएँ और प्राथमिकताएँ परिष्कृत करते जाने के विधि–विधान स्थापित किए थे। उनका मानना था कि वृत्ति व प्रवृत्ति चेतना के मूर्तक व आवरण है तथा मरणोपरान्त, देहान्तोपरान्त वृत्ति व प्रवृत्तियाँ नष्ट नहीं होतीं। अतः मानव जीवन का अपरिहार्य लक्ष्य है– वृत्ति व प्रवृत्ति का सतत परिष्कार और उद्धार। यह एक सनातन और कभी भी असामाप्य कर्त्तव्य माना गया।

आज भयंकर और अत्यन्त कष्टप्रद मूढ़ता के काल में चेतना तत्त्व का ज्ञान शून्य है। विज्ञान चेतना को पदार्थ से उद्भूत मानता है, अतः नाशवान मानता है। जबकि भारतीय ज्ञान परम्परा चेतना को अनादि–अनन्त व सतत उन्मीलक व सतत् उद्घाटित तत्त्व मानते हैं। पुनः पुनः अंकुरित होकर स्वयं को अधिकाधिक प्रकाशपूर्ण व सतत्त्वपूर्ण होते जाना एक निश्चित तथ्य मानते हैं।

इस अत्यन्त गहन व उर्ध्व–विज्ञान दृष्टि के बिना मात्र प्राणिक आवेगों–प्रवेगों की तृप्ति के उपायों में लगा मनुष्य मात्र दण्ड भय से सुधर जाएगा–ऐसा सोचना विशाल और गहरी भ्रान्ति है। और फिर दण्ड देने वाले स्वयं प्राणिक–आवेगों के दास हैं। प्राण के नियंत्रण की व मन के शिव संकल्पीकरण की शिक्षा का तो आज दूर–दूर तक पता ही नहीं है।

भारत की तीन प्रमुख धर्म धाराएँ वैदिक, जैन श्रामणिक व बौद्ध श्रामणिक, तीनों परम्पराएँ मानव के चारित्रिक विकास व प्राण के नियंत्रण तथा मन के शिवसंकल्पन के विषय में एक मत हैं। उनके अवांतर दार्शनिक भेद, इन आदर्शों के आड़े नहीं आते। लक्षों, सहस्त्रों युगों की अनुभूत परीक्षित और प्रयुक्त जीवन पद्धति को त्याग कर मात्र तीन सौ वर्ष की अबोध, शिशुवत, विज्ञानवृत्ति पर सम्पूर्ण विश्वास व भरोसा करना कितना मूढ़तापूर्ण है, विचारणीय विषय है।

लाखों वर्षों के भारतीय अनुभवों के आधार पर नए युग के लिए नयी संस्कृति व शिक्षण व्यवस्था लाकर ही व्यापक सामाजिक अनाचारों को समाप्त किया जा सकेगा, अन्यथा तो मानवता का भगवान नहीं असुर ही मालिक है।

उत्साह, संकल्प और धूमधाम से मनाएँ आर्यजन ऋषि-पर्व

विश्वभर के आर्यमहानुभाव एवं आर्य संस्थाएँ धूमधाम से मनाएँ ऋषि-पर्व - आचार्य बलदेव

इस अति विशेष अवसर पर वेद और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के निमित्त कुछ विशेष सुझाव

1-महर्षि दयानन्द की जयन्ती अर्थात् ऋषि-पर्व पर यज्ञों और वेद प्रचार का विशेष आयोजन होना चाहिए। प्रत्येक आर्य महानुभाव को चाहिए कि वे अपने मुहल्ले में घर-घर जाकर विशेष यज्ञ का आयोजन करें ही साथ ही महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के सम्बन्ध में विशेष जानकारी देने का कार्यक्रम आयोजित करें। उपदेशकों के उपदेश और आर्ष साहित्य का वितरण करें, जिससे जनमानस को ऋषि के व्यक्तित्व और कृतित्व की ठीक-ठीक जानकारी हो सके।

2-प्रत्येक आर्य महानुभाव और आर्य संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने शुभ निवास स्थान पर 'ओ३म् ध्वज' फहराएँ और ऐसे आयोजन भी करें, जिसमें जनमानस की भागीदारी हो।

3-नई पीढ़ी और बच्चों को वैदिक धर्म, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित साहित्य का वितरण कर उन्हें प्रेरणा देने के लिए प्रत्येक आर्य समाज को संकल्प के साथ आगे आना चाहिए। 'बाल मेले' और 'बाल प्रतियोगिताओं' का भी विशेष आयोजन किया जा सकता है।

4-महर्षि के जीवन का मुख्य लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और उनके आदर्श समाज और संस्कृति निर्माण के लक्ष्य का ध्यान रखते हुए ऐसे कार्यक्रम बनाए जाने चाहिए जो जन साधारण पर प्रभाव डालने वाले हों। मीडिया का अधिकाधिक प्रयोग ऋषि-पर्व को स्मरण दिलाने के लिए ही नहीं बल्कि आदर्श समाज, संस्कृति चेतना और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के निमित्त भी करें। दैनिक पत्रों और पत्रिकाओं में विज्ञापन बड़े पैमाने पर देने का अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।

4- महर्षि दयानन्द का चित्र, लघु जीवनी और वेद सम्बन्धी साहित्य का वितरण के लिए भी तैयारी करें। अपने क्षेत्र के अधिकाधिक लोगों को प्रेरित करके इसमें सम्मिलित करें।

5-प्रभातफेरी और शोभायात्रा का वृहद स्तर पर आयोजन करें।

6-समाज के असहाय, निर्बल, रोगी और उपेक्षित लोगों के लिए ऋषि लंगर का आयोजन करें। साथ ही साथ आर्य समाज का साहित्य भी वितरित करें।

7- स्थानीय स्तर पर निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं में लेखादि और विज्ञापन देकर प्रत्येक आर्य महानुभाव अपने कर्तव्य का सम्यक् पालन करते हुए आर्यत्व का परिचय दे सकते हैं।

8-आर्य समाज के स्वर्णिम इतिहास पर कार्यशालाएँ, शिविर और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी प्रत्येक दृष्टि से उत्तम होगा।

9- जनहित में परोपकार एवं सेवा वाले कार्यो जैसे चिकित्सा शिविर, सामूहिक विवाह, रक्तदान शिविर और चिकित्सकीय जाँच शिविर का आयोजन जैसे अनेक सेवाभावी कार्य इस विशेष अवसर पर किए जाने चाहिए।

10-आर्यजनों को इस दिन स्वेच्छिक अवकाश अवश्य लेना चाहिए।

11-महर्षि दयानन्द के जन्मदिन की बधाई 'ऋषि-पर्व' की शुभकामनाएँ' के रूप में अवश्य प्रत्येक आर्य महानुभाव को अपने सभी शुभचिन्तकों को भेजनी चाहिए।

12-वैदिक मिशनरियों को अपने आयोजनों में सम्मानित करें और आर्य समाज में नई पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए कुछ इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करें, जिससे उन्हें आर्य समाज और ऋषि के सम्बन्ध में सही जानकारी मिल सके।

हम सभी आर्य महानुभाव अपने स्तर पर महर्षि दयानन्द के जन्मदिन को 'ऋषि-पर्व' के रूप में मनाते आ रहे हैं। प्रत्येक वर्ष हम इसे दुगने और चौगुने उत्साह और संकल्प के साथ मनाते रहे हैं। ज्ञातव्य है आर्य समाज, ऋषि के कृतित्व व व्यक्तित्व को जनमानस तक पहुँचाने का यह विशेष अवसर होता है। इस वर्ष यह पर्व 7 मार्च2013 को पड़ रहा है। इस दिन, सभी आर्यजनों को चाहिए की ऐसे कार्यक्रम आयोजित करें जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से उपयोगी हो।

ओ३म्

आर्य पर्वों की सूची : विक्रम सम्वत् 2069-70 तद्नुसार सन् 2013

क्र. सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	वार
1.		लोहड़ी	पौष शुक्ल,2 वि. 2069	13/01/2013	रविवार
2.		मकर-संक्रान्ति	पौष शुक्ल,3 वि. 2069	14/01/2013	सोमवार
3.		गणतन्त्र दिवस	पौष शुक्ल, 14 वि. 2069	26/01/2013	शनिवार
4.		वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, 5 वि. 2069	15/02/2013	शुक्रवार
5.		सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि.2069	5/03/2013	मंगलवार
6.	ऋषि-पर्व	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण,10 वि.2069	7/03/2013	गुरुवार
7.	ज्योति-पर्व	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 14 वि.2069	10/03/2013	रविवार
8.	वीर-पर्व	पं.लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2069	14/03/2013	गुरुवार
9.	मिलन-पर्व	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2069	26/03/2013	मंगलवार
10.		आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/ चैती चांद	चैत्र शुल्क, 1 वि.2070	11/04/2013	गुरुवार
11.		रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2070	19/04/2013	शुक्रवार
12.		वैशाखी	चैत्र शुक्ल, 4 वि. 2070	13/04/2013	शनिवार
13		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख शुक्ल 3 वि.2070	13/05/2013	सोमवार
14.		हरितृतीया(हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3 वि.2070	9/08/2013	शुक्रवार
15.	वेद-प्रचार	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2070	20/08/2013	मंगलवार
16.	समारोह	हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	भाद्रपद कृष्ण, 4 वि.2070	24/08/2013	शनिवार
17		श्री कृष्णजन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2070	28/08/2013	बुधवार
18.		विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल, 10 वि.2070	13/10/2013	रविवार
19.		स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल, 12, वि. 2070	16/10/2013	बुधवार
20.	क्षमा-पर्व	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2070	3/11/2013	सोमवार
.	बलिदान-पर्व	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष कृष्ण 6, वि. 2070	23/12/2013	सोमवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

- महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

पृष्ठ एक का शेष केन्द्रीय गृह मन्त्री सुशील कुमार.....

पिछले दिनों कांग्रेस के चिन्तन बैठक के दौरान वैसे तो अनेक बातों पर चिन्तन किया गया, लेकिन सबसे बड़ा चिन्तन जिसने देश और पूरे भारतीय समाज को कठघरे में खड़ा कर दिया और देश की एकता और अखण्डता के लिए चुनौती के रूप में आया वह केन्द्रीय गृह मन्त्री सुशील कुमार शिन्दे का वह बयान (कथित चिन्ता और चिन्तन) में आया जिसमें स्वयंसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भाजपा को आतंककारी गतिविधियों में सम्मिलित होने का आरोप लगाया। श्री शिन्दे के ऐसे बयान का आधार क्या है यह तो वे ही जाने, लेकिन इससे एक बात साफ तो हो ही गई है कि उन्होंने उन आतंककारियों को यह कहने का अवसर अवश्य दे दिया कि आतंक फैलाने का स्थान और आतंककारियों को प्रशिक्षण पाकिस्तान नहीं , भारत है, क्योंकि भारत के गृह मन्त्री ने स्वीकार किया है। गौरतलब है, ऐसे बयान ही देश की अस्मिता और एकता को खण्डित करने वाले होते हैं और देश की छवि विश्व में मटियामेट हो जाती है। आज जब सारा देश आतंकवाद समेत अनेक गम्भीर समस्याओं से जूझ रहा है, ऐसे में देश के गृह मन्त्री का बयान देश को तोड़ने वाला ही नहीं बल्कि गृह युद्ध के लिए भी उकसाता है।ध्यान रहे, विश्व अभी तक यही मानता रहा है कि भारत में सभी आतंककारी घटनाओं के पीछे मुसलिम आतंकवाद है, लेकिन अब तो गृह मन्त्री के बयान से विश्व में इसके ठीक विपरीत सन्देश गया कि–भारत में आतंककारी गतिविधियों में वहां की विपक्षी पार्टी और एक स्वयं सेवक संगठन का हाथ है। लगता है, जिम्मेदार पदों पर रहने वाले राजनेताओं को इतनी भी समझ नहीं कि देश और भारतीय समाज के लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। गौरतलब है, इसके बाद कांग्रेस के नेता शिन्दे के पक्ष में खड़े होते दिखे। गए। देश में इसे लेकर अत्यधिक तनाव हो गया। सारे देश ने माँग की कि केन्द्र सरकार इस जघन्य अपराध का माकूल जवाब दे। लेकिन क्या फिर वहीं समझौते वाली नीति को नहीं अपनाया गया? आज आवश्यकता इस बात की है कि देश की गरिमा को समझते हुए देश की भावना का आदर किया जाय। और महामना चाणक्य की नीति के अनुसार 'शत्रु को कभी कम करके नहीं आंकना चाहिए। पता नहीं कब देश खतरे में पड़ जाए।'

गणतन्त्र और गणतन्त्रीय समाज एक आदर्श तन्त्र और समाज तभी बन सकता है जब प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्य का पालन करे।

पृष्ठ एक का शेष गणतन्त्र की मूलभावना,.....

भारतीय समाज विश्व के अन्य देशों के समाजों से कई बातों में भिन्न है। यह भिन्नता परतन्त्रता के समय तो थी, लेकिन उस रूप में नहीं थी जैसी आज है। देश के प्रत्येक व्यक्ति की भावना यही थी (अपवादों को छोड़ दें तो)कि देश किसी प्रकार से अंग्रेजी दासता से मुक्त हो और देश का प्रत्येक व्यक्ति खुले में श्वास ले। लेकिन स्वतन्त्रता के कुछ वर्ष पूर्व से ही अंग्रेजों के भेद–नीति का शिकार हो कुछ लोग मजहब के नाम पर देश को तोड़ने के कार्य किए, जिसका प्रभाव आज भी देश में दिखाई देता है। आज का अधिकांश भारतीय समाज देश के लिए नहीं अपने व्यक्तिगत उन्नति को ही प्रमुखता दे रहा है। इससे निश्चित ही भारतीय गणतन्त्र कमजोर हुआ है। आज हमें विचार करना होगा कि कैसे देश में शान्ति, सद्भावना, एकता और परस्पर हित की भावना को बनाए रखा जाय। जब तक देश के प्रत्येक व्यक्ति में 'देश के लिए' जीने की भावना नहीं पैदा होगी तब तक देश की एकता, शान्ति और सद्भाव पर निश्चिन्त नहीं हुआ जा सकता है।

आज देश कई प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा है। हमारी सीमाएँ सुरक्षित नहीं रह गई हैं। संस्कृति, स्वभाषा, स्वराष्ट्र, स्वदेशी और शाकाहार जो कभी इस देश के आधार हुआ करते थे आज इन पर खतरा मडरा रहा है। जिस रूप में आज देश है, इसको लेकर कोई भी देशभक्त नागरिक सन्तुष्ट नहीं है। सबसे अधिक देश में जो समस्या है वह देश की गिरती हालात को लेकर है। आए दिन भारत से लगने वाली सीमाओं पर तनाव और गोलीबारी की घटनाएँ होती रहती हैं। केंद्र सरकार जन भावना का आदर करने के बजाय अमरीकी दबाव में पाकिस्तान से इक तरफा शान्ति और सदभावना की पहल करता रहता है। पिछले दिनों कश्मीर से लगती हुई सीमा पर पाकिस्तान के क्रूर सैनिक भारत के दो जवानों के सिर कलम करके ले

विशेष सूचना आगामी आयोजित कार्यक्रम

सभी आयोजनों में अधिकाधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम सफल बनाएँ

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (ऋषि पर्व)

तिथि : गुरुवार, 7 मार्च 2013

आयोजक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

होली के पावन अवसर पर

होली मिलन मंगल समारोह का भव्य आयोजन

तिथि : रविवार, 24 मार्च 2013

आयोजक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

ज्योति–पर्व (ऋषि बोधोत्सव)

तिथि : रविवार, 10 मार्च 2013

आयोजक : आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली प्रदेश

महाशय धर्मपाल जी के 90 वें जन्मदिवस के अवसर पर

अमृत महोत्सव का भव्य आयोजन

तिथि : मंगलवार, 26 मार्च 2013

आयोजक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

पृष्ठ 3 का शेष स्वाधीनता संग्राम : महर्षि दयानन्द...

दयानन्द का उल्लेख करके नवयुवकों में विष फैला रहे हैं। अभिप्राय यह कि इन देशभक्तों का नाम लेना भी पाप था।

जैसा कि मैंने कहा, कि पटियाला का मुकदमा किसी रियासत–विशेष का मुकदमा न था, यह तो आर्य–समाज की राष्ट्रीय भावनाओं को दबा देने का प्रयास था। एक आफिसर कमांडिंग ब्रिगेड ने अपनी सेना में यह आज्ञा प्रकाशित की थी–All ranks are forbidden to attend the meetings of Arya Samaj or any other Political body" (सभी ओहदों वालों को आर्यसमाज अथवा किसी अन्य राजनीतिक दल की सभाओं में भाग लेने से रोक दिया जाता है।) ए इंडियन रेजिमेंट के अस्पताल सहायक को अपने अफसर से यह आदेश मिला कि वह आर्य समाज की सदस्यता से त्यागपत्र दे दें। इन्दौर के लक्ष्मण राव शर्मा से इन्सपेक्टर जनरल आव् पुलिस ने ये शब्द कहे–I have a very high opinion about you and have no other complaint against you but i am very much displeased to see you taking part in such a seditious body"

(मैं तुम्हारे बारे में बड़ी उच्च राय रखता हूँ और मुझे तुम्हारे खिलाफ कोई शिकायत भी नहीं है, लेकिन मैं यह जानकर बहुत अधिक अप्रसन्न हूँ कि तुम इस प्रकार की राजद्रोहात्मक संस्था (आर्य समाज) में सक्रिय हो। लक्ष्मणराव जी इन्दौर आर्य समाज के सभापति थे।

लार्ड मिंटो का जुलूस जिस समय जोधपुर नगर में होकर निकला, वहाँ की पुलिस ने आर्य समाज भवन पर से जबरदस्ती **'ओ३म्'** का झण्डा उतार लिया और आर्य समाज का साइनबोर्ड हटा दिया। यह भवन उसी रास्ते में था, जिस पर जलूस को जाना था।'

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (7 मार्च) पर शुभकामना विज्ञापन

महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव पर इस वर्ष 10 से अधिक अखबारों में विज्ञापन दिए जाएंगे। ज्ञातव्य है, गत वर्ष भी इसी प्रकार से विज्ञापन दिए गए थे, जिससे करोड़ों लोगों के पास महर्षि के अवदान और जीवन दर्शन की प्रेरणा पहुँची। इन विज्ञापनों से जन मानस में महर्षि, आर्य समाज और वेद के प्रति जहाँ जिज्ञासा उत्पन्न होती है वहीं पर श्रद्धा भी पैदा होती है। आर्य महानुभाव, आर्यसमाजें, आर्य शिक्षण संस्थाएँ और अन्य आर्य समाज से सम्बन्धित संस्थाएँ इसमें भाग लेकर अपनी पुण्य आहुति सकते हैं। विज्ञापन की दर 1500/– रु0 एवं फोटो सहित 3000/– रु0 प्रति व्यक्ति/संस्था है। इसके लिए चेक ***'आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य'*** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1** को भेजा जाना चाहिए। अधिक जानकारी के लिए उपमन्त्री **श्री सतीश चड्ढा जी** (09540041414) से सम्पर्क करें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल	सुरेन्द्र रैली	राजीव आर्य
प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान	मन्त्री

श्री गुरु विरजानन्द का 'भव्य स्मारक' बनाने हेतु सुझाव आमन्त्रित हैं

दण्डी श्री स्वामी विरजानन्द जी का जिनता ऊँचा स्थान है उनके अनुरूप चाहते हुये भी हमारी अकेली संस्था ऐसा भव्य स्मारक नहीं बना पाई। यह स्थिति हमारे लिये सदैव खटकती रहती है। अब हमने निश्चय किया है कि गुरुवर का भव्य स्मारक बनाया जाए, जिसमें भवनों के निर्माण के साथ उनके द्वारा निर्दिष्ट वैदिक सिद्धान्तों के मिशन का सर्वत्र प्रचार व प्रसार हो, जिससे वेद ज्ञान का वैज्ञानिक रूप मानवता स्वीकार करे। इस संस्था में वैदिक अनुसन्धान करें। यहाँ देश–विदेश के आर्य नर–नारी यथासमय आकर प्रेरणा प्राप्त करें। इस संस्थान को मन–वचन तथा कर्म से उन्नति प्राप्त करने का तीर्थ स्थान माने।

1. कृपया अपने सुविचारित सुझाव भेजें कि इस संस्थान में क्या–क्या कार्यकलाप संचालित हों।

2. गुरुवर की जन्मस्थली को जो आवयश्कता होगी, उसकी पूर्ति के लिए क्या–क्या कदम उठाये जायें?

हम पंजाब सरकार से सम्पर्क कर रहे हैं कि इस पुण्य कार्य हेतु, करतारपुर में चल रहे गुरुकुल के अति निकट हमें भूमि प्रदान करें। आशा है कि सरकार स्वीकार कर लेगी।

पता– श्री गुरुविरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर, पंजाब

कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज गांधी नगर, जम्मू का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गाँधी नगर, जम्मू का वार्षिकोत्सव 20 से 30 दिसम्बर 2012 तक धूमधाम एवं उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। 22 दिसम्बर को कोटवाल सेन्ट्रल जेल जम्मू में 432 कैदियों के सामने उत्सव में पधारे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य आनन्द पुरुषार्थी का प्रवचन हुआ। कारागार में 2 घण्टे तक कार्यक्रम चला। यह प्रथम अवसर था जब आर्य समाज का प्रचार कैदियों के मध्य हुआ। वार्षिकोत्सव में आचार्य पुरुषार्थी के अतिरिक्त पं. उपेन्द्र आर्य के मार्मिक भजनोपदेश हुए। –मन्त्री

पाकिस्तान की करतूतों पर रोष

पिछले दिनों सीमा पाकिस्तान के सैनिकों द्वारा किए गए बर्बरतापूर्ण कृत्य के विरोध में 13 जनवरी को आर्यवीर दल यूथ ब्रिगेड, न्यू विकास नगर,लोनी, गाजियाबाद(उ.प्र.) में रैली निकाली गई और पाकिस्तान का पुतला फूंका गया। रैली का नेतृत्व श्री दिनकर शर्मा सुपुत्र स्व. बाल दिवाकर हंस ने किया। रैली और सभा के बाद भारत सरकार से मांग की गई कि पाकिस्तान की इस बर्बर कार्रवाई का मुँहतोड़ जवाब देना चाहिए, जिससे आगे ऐसी बर्बरता से पाकिस्तान बाज आए। इस अवसर पर दीपेक्ष शर्मा, संदीप गोस्वामी, गौरव गुप्ता सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

काव्य सलिला

वेदाधारित हो गणतन्त्र

जिसके अंकुर को सींचा था, अमर शहीदों ने शोणित से,
वही दिखायी अब पड़ते हैं, उत्पीड़ित से व शोषित से।
सभी जगह नीचे से ऊपर,व्याप्त हुआ है भ्रष्टाचार,
पतित हुआ है चरित्र राष्ट्र का, बढ़ा जा रहा अत्याचार।
सत्ताधारी शासक सारे, हुए स्वार्थ में अन्धे हैं,
स्वार्थपूर्ति के लिए उन्होंने, किए प्रदूषित धन्धे हैं।
सत्य धर्म ले रहा सिसकियाँ, दानवता हो गई विभोर,
डाँट रहा है अब सुजनों को, पापचारी कलुषित चोर।
पश्चिम की आँधी ने कैसा, आज यहाँ कुहराम मचाया,
सत्य सनातन की संस्कृति को, इस धरती से आज उड़ाया।
टूट रहे परिवार हमारे, टूट रहा सम्पूर्ण समाज,
उग्रवाद के जालों में फँस, हुआ प्रकम्पित भारत आज।
सीमाएँ भी आज देश की, नहीं रही सम्पूर्ण सुरक्षित,
लगा हुआ है आज दाँव पर, भारत का सर्वोपरि हित।
विषम परिस्थितियों से होंगे, कैसे हम सब अब उन्मुक्त,
आओ करें विचार सभी हम, कैसे हो इनसे अब मुक्त।
एक मार्ग ही शेष बचा है, वैदिक पथ हम सब अपनाएँ,
जिससे मानवता रक्षित हो, दानवता को दूर भगाएँ।
महिमा मण्डल पर सर्वोपरि हो, भारत फिर जागे वह मन्त्र,
जयी बने फिर से मानवता, वेदाधारित हो गणतन्त्र।

– स्व. राधेश्याम आर्य

आर्य वर की आवश्यकता

दिल्ली निवासिनी आर्य वीरांगना जन्म 15 मार्च 1988 , लम्बाई : 5, 1 इंच, एम.ए. (हिन्दी), बी.एड., रंग गोरा, सुन्दर, गृहकार्य में दक्ष, शिक्षिका हेतु सुयोग्य, शिक्षित, समतुल्य आर्यवर की आवश्यकता है। **सम्पर्क करें – 09350502175**

आर्य वर की आवश्यकता

आर्य विचारों से ओत प्रोत जन्म मई, 1983/ 5'5''/एम.ए. अर्थशास्त्र, एम.एड. नेट पास, उच्चस्तरीय कम्प्यूटर एवं फैशन डिजाईनिंग डिप्लोमा युक्त, वर्तमान में पी.जी.टी. के रूप में कार्यरत एवं पी.एच.डी. कर रही, गौरवर्णीय,स्लिम कन्या हेतु समकक्ष योग्यता युक्त, स्वालम्बी, पूर्णतयः निर्व्यसनी एवं शाकाहारी आर्य वर की आवश्यकता है। सम्पर्क सूत्र :– 09425488861, 09806684799
ई–मेल– issrana@rediffmail.com

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 40 रु.	प्रचारार्थ 25 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रेरक प्रसंग

यह सब किया आर्य समाज ने

1965 की बात है। तब मैं बीस वर्ष का था। शरीर बहुत दुबला था। अतः आत्मग्लानि रहती थी। आत्मविश्वास तो था ही नहीं। मैं पानीपत रेलवे स्टेशन पर कार्यरत था। उन्हीं दिनों मेरी मुलाकात एक ऋषि–भक्त संन्यासी से हो गई। वे सांसद थे तथा माननीय तारासिंहजी के विरुध आमरण–अनशन कर चुके थे। करनाल के निकट उनका एक गुरुकुल था। उनसे मेरी पहली मुलाकात पानीपत के रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या एक पर हुई थी। मैं उनकी ओर बरबस खिंचता चला गया। उनका व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था। उनके बर्ताव में मुझे अत्यधिक अपनापन, सादगी व अगाध–प्रेम देखने को मिला। फिर तो मित्रतता ही हो गई।

वे सदा मुझसे मिलने के आतुर रहते। रेल गाड़ी से पानीपत उतर जाते। उनका उद्देश्य होता–मुझे प्यार देना व बातें करना । फिर अगली गाड़ी से आगे की ओर चल देना। वे मुझे देखकर एक बात बार–बार कहा करते थे–''भाई तुम तो ठहरे लेखक। कार्यालय में बैठकर पत्र ही तो लिखते हो। बस, लेखक ही तो हुए।''

उनका यह कथन मुझे बड़ा ही अटपटा लगता था। पर, आज मैं सचमुच का एक लेखक हूँ। मेरी पुस्तकों को पुरस्कृत किया गया है, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की पाठ्य पुस्तकों का लेखक रहा हूँ। इस क्षेत्र में और भी बहुत कुछ पा चुका हूँ। पर किसके बल पर ? क्या अपनी योग्यता के कारण या सच्ची लगन व परिश्रम के फलस्वरूप?' मुझे इसका एक ही कारण समझ में आता है – ईश–कृपा और उन महान ऋषि–भक्त संन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द जी की प्रेरणा। वरना मैं एक मामूली–सा रेल कर्मचारी ही तो था।

आप सब आज ही से अपने बच्चों को आर्य समाज के सत्संगों में भेजना शुरू कर दीजिए। कोई–न–कोई आर्य–विद्वान उन्हें प्रेरणा दे ही देगा। क्योंकि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। वैसे अब तक लाखों ने अपना जीवन इसी संस्था के सहारे संवारा है। अगली बारी आपकी है। या आप के बच्चों की। फिर चूकिएगा नहीं।'– **सुखदेव (मल्होत्रा) सेवानिवृत प्रधानाध्यापक(राजपत्रित)**

आर्यजनों के लिए खुशखबरी-साहित्य पढ़ें सीडी से
महर्षि दयानन्दकृत सम्पूर्ण साहित्य एवं सत्यार्थ प्रकाश
(18 भाषाओं में)
सीडी में उपलब्ध मूल्य मात्र 30/–रु.

साप्ताहिक आर्य सन्देश
21 जनवरी, 2013 से 27 जनवरी, 2013
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 24 / 25 जनवरी –2013
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 जनवरी, 2013

प्रतिष्ठा में,
श्री.......................

प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक कुम्भ प्रयाग में वैदिक धर्म प्रचार का शंखनाद

'विचार टीवी' के माध्यम से प्रदर्शित किए जाएंगे नैतिक शिक्षा एवं वैदिक धर्म पर आधारित चलचित्र

आर्य सन्देश को निम्न वेबसाईट पर प्राप्त करें
www.thearyasamaj.org
आर्य समाज की अन्य पत्र–पत्रिकाओं को इस वेबसाईट पर देखा जा सकता – सम्पादक

–: प्रचार शिविर का पता :–

प्रथम नैतिक फिल्मोत्सव, महाकुम्भ क्षेत्र सेक्टर –6, नागवासुकी, बक्सी बाँध, इलाहाबाद (उ.प्र.)

माता कमला आर्या धर्मार्थ ट्रस्ट के सहयोग से
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
वैदिक विनय
मात्र 125/– रुपये

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/–रु.
आर्यजन अपनी आर्य समाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।
–: प्राप्त स्थान : –
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।
सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर